▸ **गीता प्रेस:** 'नो प्राफ़िट नो लास' वाला धार्मिक प्रकाशन केंद्र

▸ **स्प्रिंगर पब्लिक स्कूल:** शिक्षा की नई परिभाषा गढ़ता एक संस्थान

₹ 30/-

PRGI NO. : UPHIN/2024/89032

रूरल न्यूज़ नेटवर्क

www.ruralnewsnetwork.in

वर्ष:02, अंक:06, जून-2025

जिला केंद्रित समाचारों की हिन्दी मासिक पत्रिका

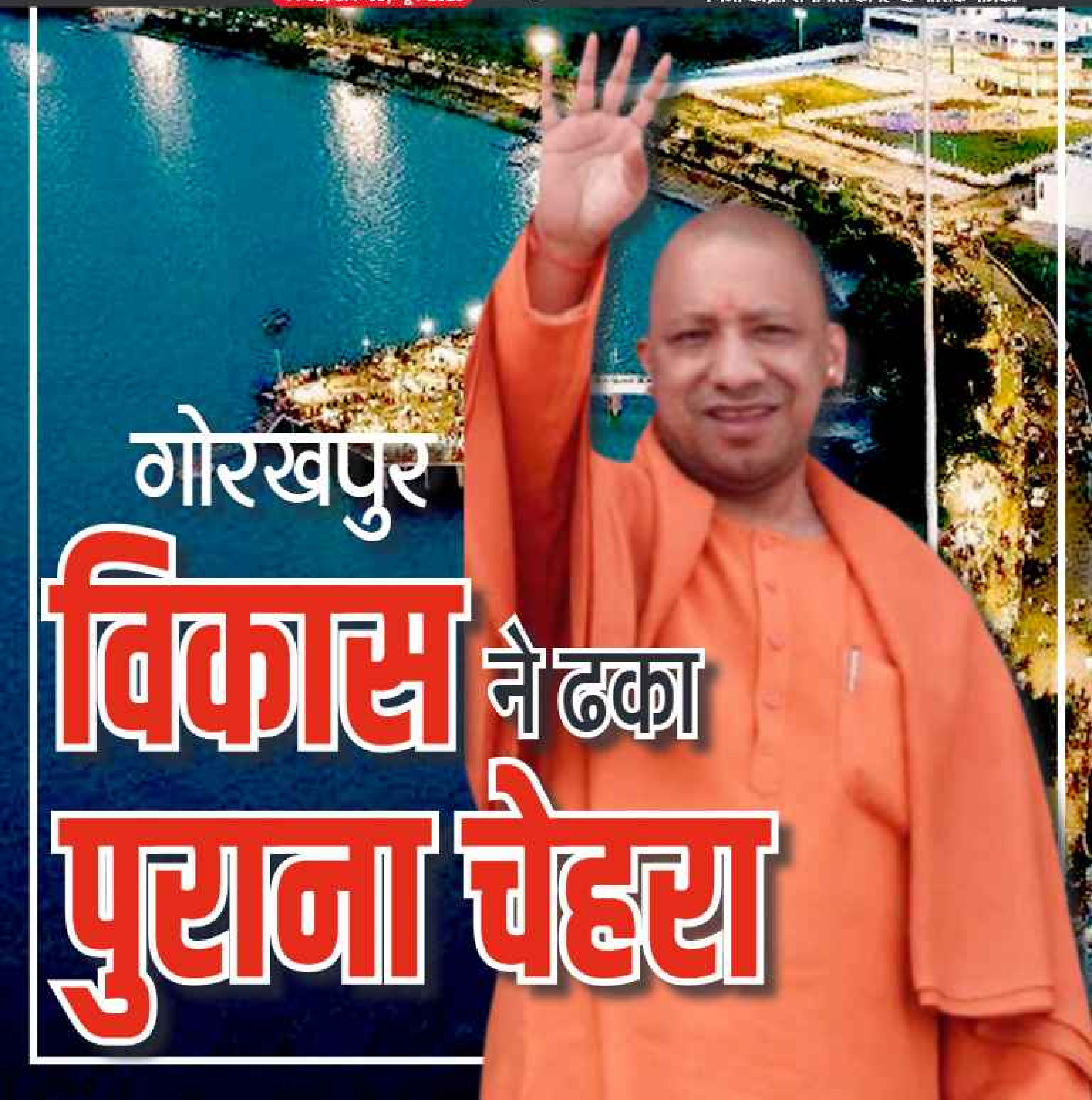

गोरखपुर

विकास ने ढका पुराना चेहरा

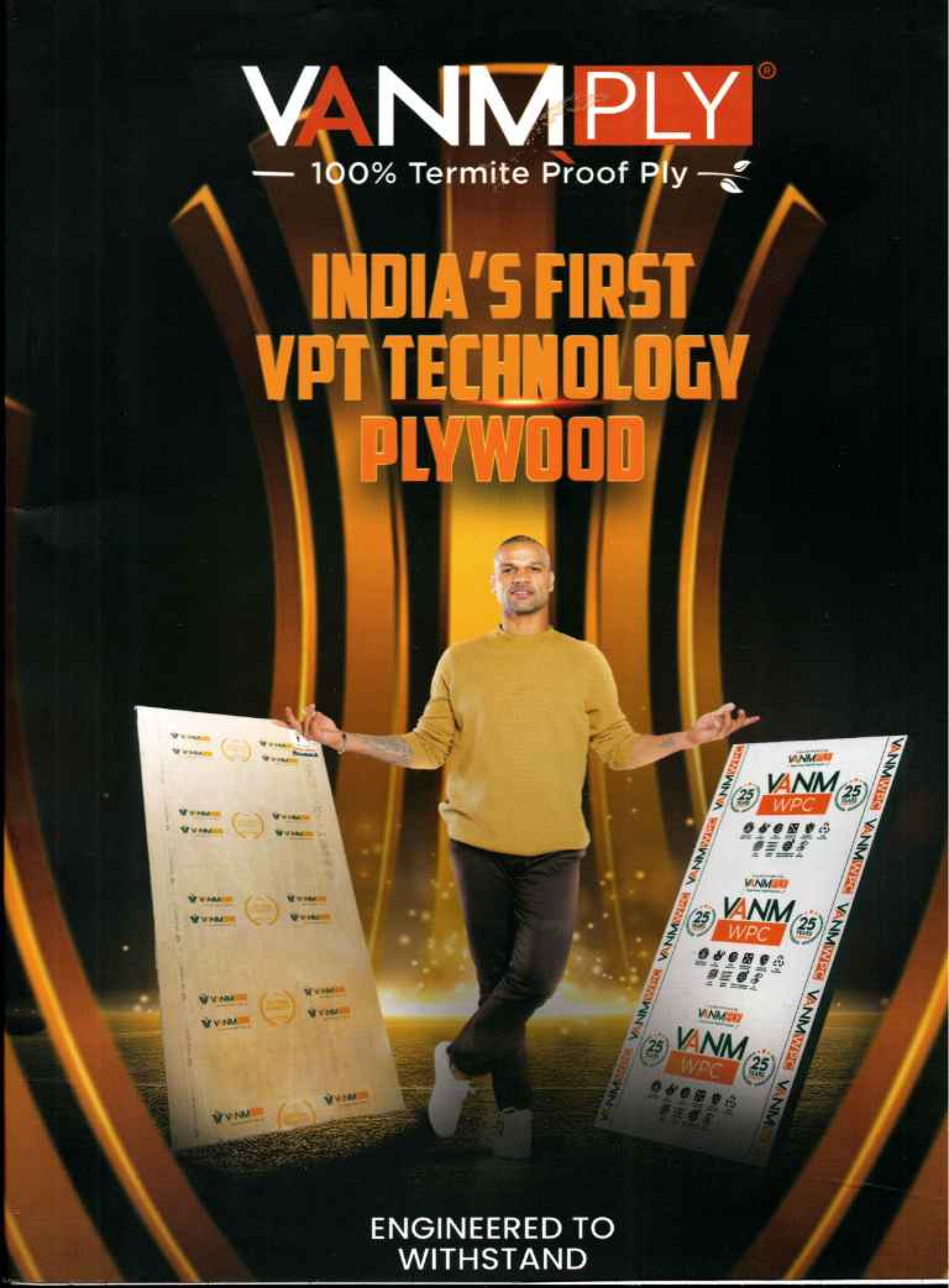
VANMPLY®
100% Termite Proof Ply
INDIA'S FIRST
VPT TECHNOLOGY
PLYWOOD
VANM
WPC
ENGINEERED TO
WITHSTAND

इस अंक में खास...

08 गोरखपुर
विकास ने ढका पुराना चेहरा

22

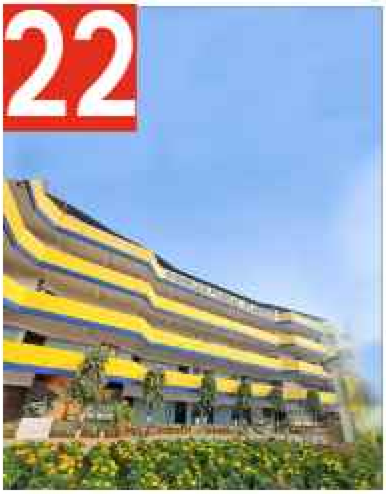

एज्यूकेशन कैंपस

स्प्रिंगर पब्लिक स्कूल: शिक्षा की नई परिभाषा गढ़ता एक संस्थान

आधुनिक सुविधाओं, उत्कृष्ट शिक्षकों और फ्यूचर रेडी विज़न के साथ यह विद्यालय छात्रों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार कर रहा है – सफलता की संपूर्ण पाठशाला बनकर।

हेल्थ कैंपस

दांतों की 'कंप्लीट डेंटल केयर'

पादरी रोड पर स्थित कंप्लीट डेंटल केयर दंत चिकित्सा का एक ऐसा केंद्र है जहां क्वालिफाइड चिकित्सकों की देखरेख में महानगरों जैसी चिकित्सा सुविधा उपलब्ध है। यहाँ संबन्धित अत्याधुनिक मशीने हैं। अस्पताल के निदेशक डॉ सौरभ पटेल डेंटल सर्जरी में मास्टर डिग्री MDS होल्डर है।

28

12

फूडनामा

बुढ़ऊ चाचा की बर्फी : स्वाद में जादू

1960 के दशक से, यह दुकान न केवल स्थानीय लोगों बल्कि पूर्वांचल और नेपाल तक के लोगों के दिलों में मिठास घोल रही है।

14

अचीवर्स

'कला में ही रच-बस जाना चाहती हूं'

भातखंडे संगीत विश्वविद्यालय में कथक सीख रही श्रेयांशी, कला के क्षेत्र में भविष्य को लेकर आशान्वित है, और दूसरों को भी अपने हुनर को तराशने के लिए प्रेरित करती है।

विविधनामा 20

फिर से दूध पिलाएगी पराग डेयरी

नेशनल डेयरी फेडरेशन को लीज पर देकर एक बार फिर से चलाये जाने की चर्चा है। अब दुग्ध उत्पादकों और इलाकाइयों के चेहरे फिर से चमकेंगे।

PRGI NO : UPHIN/2024/89032

रूरल न्यूज़ नेटवर्क

वर्ष: 02, अंक: 06, जून-2025

ग्रुप एडिटर	: शक्ति प्रकाश श्रीवास्तव
एडिटर	: रागिनी श्रीवास्तव
चीफ एक्जक्यूटिव एडिटर	: अशहर अहमद
असिस्टेंट ग्रुप एडिटर	: संदीप कुमार सिंह
एडिटोरियल कोआर्डिनेटर	: अमित कुमार सिंह 'मोनू' विनय रंजन तिवारी
ब्यूरो चीफ (लीगल)	: क्षितिज राय, LLB,LLM
फोटो जर्नलिस्ट	: डॉ राजन
मार्केटिंग	: पीसीएस मीडिया
एडिटोरियल एड्वाइजर :	रामेंद्र सिन्हा, पूर्व संपादक-दैनिक भास्कर राजेश श्रीनेत, पूर्व संपादक-अमर उजाला संजय श्रीवास्तव, पूर्व संपादक-राष्ट्रीय सहारा एसपी सिंह, सदस्य-यूपी मुख्यमंत्री मीडिया टीम
लीगल एड्वाइजर :	नीरज त्रिपाठी, अपर महाधिवक्ता-प्रयागराज अनिल कुमार, अधिवक्ता-हाईकोर्ट, प्रयागराज ज्ञान प्रकाश श्रीवास्तव, अधिवक्ता-हाईकोर्ट, लखनऊ रत्नेश कुमार पाठक, अधिवक्ता-सिविलकोर्ट
फाइनेंशियल एड्वाइजर :	अनुज श्रीवास्तव, कंपनी सेक्रेट्री/ प्रमुख-PARADIGM नवीन कुमार नांगलिया, चार्टर्ड एकाउंटेंट टेक्निकल एड्वाइजर : राशिद मालिक, दुबई चरन सिंह, BALAJI SOLUTIONS, नयी दिल्ली मो॰ शरीफ नवाज : ITइंजीनियर / CODEBRICK, सौरभ गुप्ता : IT इंजीनियर-गोरखपुर

ब्यूरो

लखनऊ	: अमित सिंह	देहरादून	: परविंदर सिंह रणहोत्रा
देवरिया	: आलोक राय	साहिबाबाद	: संजय श्रीवास्तव
प्रयागराज	: विष्णु श्रीवास्तव		

RNN बुलेटिन एडिटर

गोरखपुर ईस्ट	: संतोष कुमार श्रीवास्तव
गोरखपुर वेस्ट	: मुर्तजा रहमानी
चरगांवा	: ओ पी श्रीवास्तव
खोराबार	: डॉ जयंत नाथ
भटहट	: अविनाश श्रीवास्तव
सरदार नगर	: अजय मालवीय
पिपरौली	: दिग्विजय सिंह
खजनी	: शिवेंद्र सिंह
बड़हलगंज	: संतोष जायसवाल

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक रागिनी श्रीवास्तव द्वारा फाइन आफसेट प्रिंटर्स, मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग, बक्शीपुर, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित कराकर 19 जीएफ, जीडीए कालोनी, निकट टेलीफोन एक्सचेंज, राप्ती नगर फेज-3, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) 273003 से प्रकाशित

PRGI NO : UPHIN/2024/89032

ई-मेल : ruralnews116@gmail.com,

वेबसाइट : ruralnewsnetwork.in

नोट- पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के लेख व रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है ! पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गोरखपुर होगा एवं पत्रिका में सभी पद अवैतनिक है।

एडिटोरियल

फुटपाथ को फुटपाथ ही रहने दें...

गोरखपुर जिले का शायद ही कोई कस्बा या तहसील मुख्यालय ऐसा होगा जहां सड़कों के किनारे बने फुटपाथ का इस्तेमाल फुटपाथ मतलब पैदलयात्रियों के आने-जाने के लिए इस्तेमाल होता हो। मेरे देखने में तो अभी तक कहीं ऐसा नहीं दिखा। हर सड़क का फुटपाथ पूरी तरह अतिक्रमण का शिकार है। सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सपने की मुताबिक गोरखपुर का जिस तरह विकास हो रहा है उसमें सबसे बड़ी बाधा के रूप में फुटपाथ का अतिक्रमण दिख रहा है। महानगर के संदर्भ में बात करे तो शहर की क्या गोरखनाथ, मेडिकल रोड, पैडलेगंज, नौसढ़ का इलाका हर जगह की पुरानी दो लेन की सड़कें चार और छः लेन की सड़कों में बदल गई हैं। लेकिन उनके भी किनारे बनी फुटपाथों का भी यही हाल है। ठेले-खोमचे वालों की गिरफ्त में है। सड़क निर्माण के दौरान भले ही ये अतिक्रमणकारी किसी तरह अपना ठौर कहीं और रखते है लेकिन मौका मिलते ही फिर से उन्ही जगहो पर वापस काबिज हो जाते है। इन सड़कों पर रोज फर्राटे भरती प्रशासनिक अधिकारियों की गाड़ियां इधर से गुजरती है। उनमे बैठे अधिकारी भी आए-दिन जाम से दो-चार होते है लेकिन क्यों वो आंखे मूँदे रहते है ये समझ से परे है। आरोप भ्रष्टाचार का लगता है कि संबंधित अधिकारी- कर्मचारी की शह पर ही यह अतिक्रमण होता है। चंद रुपयों के लालच में ये कर्मचारी-अधिकारी व्यवस्था की ऐसी-तैसी कर देते हैं। अभी मोहद्दीपुर से पैडलेगंज फोर लेन की ही बात करें जो बनकर तैयार हो गया है। यहाँ जब सड़क दो लेन की थी तब किनारे की फुटपाथ पर अवैध तरीके से फूल-पौधे बेचने वालों का कब्जा था। जब सड़क बनने लगी तो ये सभी यहाँ से कहीं और चले गए। लेकिन अब जब सड़क और उसके फुटपाथ का अधिकांश हिस्सा बन चुका है। फिर से ये फल-फूल विक्रेता अपना अड्डा बनाने लगे है। मतलब कहने के लिए सड़क चार लेन की होगी लेकिन इन अतिक्रमणकारियों के चलते इस्तेमाल लायक शायद दो लेन भी न बच पाए। मुख्यमंत्री का शहर होने के नाते अधिकारियों को इस समस्या पर गौर करना चाहिए। चाहिए कि ऐसी व्यवस्था दें कि फुटपाथ फुटपाथ ही बना रहे।

रागिनी

ग्रुप एक्जक्यूटिव कौंसिल

बीबी परमजीत कौर 'राना'	शरदेंदु कुमार पाण्डेय	ओ एस मौर्य
एडमिनिस्ट्रेटर- गुरुद्वारा भगत कबीर जी, मगहर	समाजसेवी	पर्यावरणविद्

नए सत्र के लिए प्रवेश प्रारम्भ

26.05.2025 से

बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर

(दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से सम्बद्ध)

स्नातक पाठ्यक्रम (Undergraduate Courses)

- B.A.
- B.Sc.
- B.Com.

स्थापित वर्ष 1954 ई०

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (Postgraduate Courses)

- M.A.
- M.Sc.
- M.Com.

महाविद्यालय में निम्न अध्ययन केन्द्रों की सुविधा उपलब्ध हैं

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU), नयी दिल्ली
उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय (UPRTOU), प्रयागराज

बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर

वी.एस.आहलुवालिया

"गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा की ओर एक सशक्त कदम"

सरदार सत्यजीत सिंह मजीठिया

प्रो. विनोद मोहन मिश्र
प्राचार्य

संपर्क करें

http:buddhapgcollege.edu.in
principal.kushinagar@gmail.com

पाक से युद्ध

कश्मीर के पहलगाम जिले में 22 अप्रैल को हुई आतंकी वारदात में दो दर्जन से अधिक देशी-विदेशी पर्यटकों की हत्या हुई थी। आधे दर्जन शातिर पाक समर्थित आतंकवादियों द्वारा किए गए इस घटना के प्रतिक्रिया स्वरूप भारत ने 6 मई की रात में आपरेशन सिंदूर चलाकर आतंकवादियों के पाक और पाक अधिकृत कश्मीर स्थित कुल नौ ठिकानों को ध्वस्त कर दिया था। इसके बाद बौखलाए पाकिस्तान ने 8 मई की रात राजस्थान, पंजाब और कश्मीर के कुछ इलाकों में मिसाइलों से हमला कर दिया। इनमें से अधिकांश हमलों को भारतीय सेना ने एयर डिफेंस सिस्टम से नाकाम कर दिया। दोनों देशों की सहमति से 10 मई को सीजफायर हुआ। हालांकि उसी दिन सीजफायर के चंद घंटों बाद ही पाकिस्तान ने भारतीय क्षेत्रों में ड्रोन और मिसाइल दाग कर सीजफायर का उल्लंघन कर दिया। फिलहाल उसके बाद से शांति है। दोनों देशों द्वारा जारी प्रतिबंध हालांकि अभी भी बरकरार है। इस पूरे सैन्य कार्रवाई में भारत की अपेक्षा पाकिस्तान का नुकसान अधिक हुआ है। इस पूरे मामले पर प्रस्तुत है नगरवासियों की प्रतिक्रियाएं :-

अज़हर जमील
चीफ एक्जक्यूटिव एडिटर
रूरल न्यूज नेटवर्क

जम्मू कश्मीर में आतंकवाद और आतंकवादी दोनों ही खत्म होने चाहिए। क्योंकि एक लंबा अरसा हो गया अब इस समस्या का पटाक्षेप होना ही चाहिए।

- मनोज कुमार
शिक्षक

केंद्र सरकार को अपने कश्मीर संबंधी नीतियों में बदलाव करना चाहिए। तभी देश का सम्मान और अस्तित्व दोनों ही सुरक्षित रह सकेगा।

- अशोक चौधरी
वरिष्ठ पत्रकार

कुछ भी हो लेकिन पाकिस्तान के मामले का स्थायी हल होना चाहिए। क्योंकि बहुत हो चुका। आतंकवादी ठिकाने तो पूरी तरह समाप्त होने चाहिए।

- अजय सिंह
कर्मचारी

कश्मीर में रोज-रोज होने वाले आतंकवादी घटनाओं से निजात मिलनी चाहिए। चाहे युद्ध ही क्यों न करना पड़े।

- शबिस्तां खान
शिक्षिका

जन-गण-मन

एक भी बम फूटा तो उसे युद्ध माना जाएगा। स्थिति को देखते हुए यह घोषणा सर्वथा उचित है।

- समर दूबे
पूर्व वायु सैनिक

सरकार को कुछ ऐसा करना चाहिए की जम्मू-कश्मीर क्षेत्र में रोज-रोज हो रहे आतंकी वारदातों से निजात मिल सके।

- कंचन सोनी
माडल.एक्ट्रेस

आपरेशन सिंदूर से सेना ने जिस तरह से पहलगाम हमले का बदला लिया वो काबिलेतारीफ है।

- दिलीप कन्नौजिया
व्यवसायी

पाकिस्तान को अब अपने नापाक गतिविधियों पर अंकुश लगाना चाहिए। क्योंकि उसकी यह हरकते उसके भविष्य के लिए ठीक नहीं है।

- वी . एस . आहलूवालिया
समाजसेवी

आतंकवादियों का मुखौटा लगाकर पाकिस्तान यह खेल बहुत दिनों से खेल रहा है। अब इसका भी खेला होना ही चाहिए।

- सुधीर मिश्र
समाजसेवी

युद्ध तो दोनों ही देशों के हित में नहीं है। फिर भी कुछ भी हो इस समस्या का समाधान होना चाहिए।

- शिबानी भूषण
एंकर.एनाउंसर

सीजफायर उल्लंघन की स्थिति में सरकार को सख्त कदम उठाते हुए पाकिस्तान को सबक सिखाना चाहिए था।

- अनमोल पाण्डेय
प्रतियोगी छात्र

शक्ति प्रकाश श्रीवास्तव
ग्रुप एडिटर- रूरल न्यूज नेटवर्क

गोरखपुर विकास ने ढका पुराना चेहरा

यूं तो गोरखपुर प्रदेश के पूर्वी हिस्से का एक महत्वपूर्ण जिला है। नेपाल राष्ट्र और पड़ोसी बिहार प्रदेश से नजदीक होने के कारण इसकी अहमियत और बढ़ जाती है। क्योंकि इस इलाके की करोड़ों-करोड़ की आबादी के स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार आदि की जरूरतें काफी हद तक यहाँ से पूरी होती है। यहाँ स्थित नाथ संप्रदाय के प्रसिद्ध गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने के बाद से प्रदेश के अन्य हिस्सों के साथ-साथ गोरखपुर का भी ऐतिहासिक विकास हुआ।

गोरखपुर, जो कभी माफिया और मच्छरों के लिए बदनाम था, आज मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की नेतृत्व क्षमता से विकास की नई पहचान बना चुका है। स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग, पर्यटन और अधोसंरचना के क्षेत्र में यहां अभूतपूर्व कार्य हुए हैं, जो गोरखपुर को उत्तर भारत का नया विकास मॉडल बनाते हैं।

अस्सी के दशक में माफिया और मच्छरों के नाते देश-दुनिया में पहचाना जाने वाला शहर आज विकास के लिए जाना जा रहा है।

2017 में बीजेपी की बहुमत वाली सरकार बनने पर योगी आदित्यनाथ को सूबे का मुख्यमंत्री बनाया गया। सत्ता संभालते ही योगी आदित्यनाथ ने अपने दो दशकीय अनुभव के आधार पर प्रदेश के विकास का एक खाका तैयार किया। इसमें गोरखपुर के लंबित फर्टिलाइजर कारखाना, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रामगढ़ ताल का सुंदरीकरण,औद्योगिक प्राधिकरण का विस्तार, चिड़ियाघर के उन्नयन, सिक्स और फोरलेन सड़क निर्माण, पिपराइच और मुंडेरवा चीनी मिलों का जीर्णोद्धार जैसे लंबित परियोजनाओं को प्रथम चरण में पूरा करने का संकल्प लिया। ये सभी परियोजनाए चरणबद्ध तरीके से निर्धारित समय में पूरी भी हो गई। लेकिन जब उन्होंने दूसरी बार सत्ता संभाली तो उन्होंने गोरखपुर के विकास के लिए वो-वो काम शुरू व पूरा किया जिसके लिए कहा जा सकता है कि न भूतों न भविष्यति। मतलब आयुष विश्वविद्यालय, अटल आवासीय विद्यालय, सैनिक स्कूल, इंस्टीट्यूट आफ होटल मैनेजमेंट, निजी विश्वविद्यालय, पशु चिकित्सा महाविद्यालय, एयरपोर्ट विस्तार, पूर्वांचल एक्सप्रेस को जोड़ने वाला लिंक एक्सप्रेसवे, फ़ोर लेन और सिक्स लेन सड़कों का जाल, आठ लेन का राप्ती नदी पुल की व्यवस्था, गोड़धईया नाला पर रिवर फ्रंट, कुसुमही जंगल मे इको फ्रेंडली पार्क, पेप्सीको, अंकुर स्टील, ज्ञान डेयरी, केयर्नस डिस्टिलरी सहित हजारों-हजार करोड़ का औद्योगिक निवेश सुनिश्चित कराने जैसे कार्य या तो हो चुके है या जल्द ही पूरा होने को है।

औद्योगिकी को प्रोत्साहित करने के लिए जिले के पश्चिमांचल में धुरियापार इंडस्ट्रियल कारीडोर की स्थापना युवाओ की बेरोजगारी की समस्या का एक हद तक समाधान देगी। आर्थिक सुदृढीकरण को बयां करते यहाँ के मैरिएट, रामादा इन, सरोवर पोर्टिको और रेडिसन ब्लू जैसे होटल पर्यटकों की पसंदीदा जगह बन चुके हैं।

इस तरह अभी तक हुए विकास की जो तस्वीर बनी है वो अतीत की नकारात्मक तस्वीर को पूरी तरह ढ़क चुकी है। अब गोरखपुर की पहचान देश के सर्वाधिक तेज विकसित हो रहे शहरों में की जा रही है। अब इस शहर को कोई मच्छरों और उससे पैदा होने वाली इंसेफेलाइटिस जैसी बिमारी के लिए या अस्सी के दशक में शिकागो के बाद दुनिया का सबसे बड़ा अपराध के केंद्र के लिए नहीं जानता है। अब इसे सीएम सिटी या तेजी से विकसित हो रहे शहर के रूप में पहचान मिल रही है। मतलब यहाँ के विकास ने अतीत के नकारात्मक तस्वीर को पूरी तरह ढक दिया है।

पत्रिका यूट्यूब चैनल
रूरल न्यूज नेटवर्क
योगी आदित्यनाथ
आवश्यकता है
गोरखपुर जिले के प्रत्येक गाँव
व ब्लाक सहित अन्य
जिला मुख्यालयों पर
सहयोगी रिपोर्टर की
अधिक जानकारी के लिए, संपर्क करें
whatsapp
9415212166
न्यूज वेबसाइट,हिन्दी/भोजपुरी/उर्दू और पंजाबी में यूट्यूब चैनल
वेंचर, आध्यात्मिक साइट, शार्ट फिल्म प्रोडक्शन एवं ओटीटी और ....
RNN
रूरल न्यूज नेटवर्क
गाँव-गिराव के गतिविधियों पर केंद्रित मासिक पत्रिका (प्रिन्ट एवं डिजिटल मीडिया)

रूरल न्यूज नेटवर्क
विज्ञापन दर
बैक पेज : 70,000/
इनर कवर : 60,000/
फुल पेज : 50,000/
हाफ पेज : 30,000/
क्वार्टर पेज : 20,000/
PCS MEDIA PVT.LTD.
Pcs Media Private Limited
Punjab & Sind Bank
NETFLEXY पूर्वांचल
कबीरनामा RNN

शृंगार प्रेमियों
को
हार्दिक शुभकामनायें
श्री प्रसाद ज्वेलर्स
शाप नं. 142, प्रथम तल, राप्ती काम्प्लेक्स
गीता वाटिका रोड, असुरन चौक, गोरखपुर
मो. 9451013133, 8009153800
मुकेश कुमार सोनी
सोना, चांदी 92 सिल्वर, 1 gm गोल्ड आभूषणों व ग्रह रत्नों के विक्रेता

फूडनामा

बुढ़ऊ चाचा की बर्फी स्वाद में जादू

देवव्रत
रिपोर्टर- गोरखपुर वेस्ट न्यूज
रूरल न्यूज नेटवर्क

महानगर के उत्तरी छोर स्थित बरगदवा चौराहे पर बुढ़ऊ चाचा की बर्फ़ी की दुकान है। साठ के दशक से इलाकाइयों में बर्फ़ी के जायके की मिठास घोल रही यह दुकान इलाकाईयों ही नहीं समूचे पूर्वांञ्चल समेत नेपालवासियों तक में किसी परिचय का मोहताज नहीं है। यह दुकान गोरखनाथ मंदिर से सोनौली जाने वाली फोरलेन सड़क पर बरगदवा चौराहे से पहले बाईं तरफ स्थित है। हालांकि इसकी लोकप्रियता के चलते अगल-बगल मिलते-जुलते नामों वाली और दुकाने भी खुल गई है। बुढ़ऊ चाचा की बर्फ़ी की सबसे बड़ी खासियत अलग किस्म की हल्की मिठास है। यही इन्हे और दुकानों की बर्फ़ी के स्वाद से अलग करती है। शो-शा के मौजूदा दौर में भी यह दुकान अपनी शुरुआती पहचान को सँजोये हुए है। यह साबित करती है कि आज भी ग्राहकों में शुद्धता और गुणवत्ता का महत्व है। क्योंकि व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के मौजूदा परिवेश में भी बुढ़ऊ चाचा के ग्राहकों में कोई कमी नहीं आई। बुढ़ऊ चाचा नाम से मशहूर राकेश कुमार चौधरी और उनके ससुर तिलक चौधरी ने बर्फ़ी बनाने का काम लगभग 1968 में शुरू किया था।

दुकान के मौजूदा जिम्मेदार बताते है कि जब दुकान थी तो उस समय इलाके में पूर्वी उत्तर प्रदेश की हैवी इंडस्ट्री रूप में इकलौती फर्टिलाइजर फैक्ट्री अपने शबाब पर थी। हजारों-हजार की तादाद में उसके कर्मचारी-अधिकारी बुढ़ऊ चाचा की बर्फ़ी के दीवाने थे।

शुद्ध दूध को अनुभव से उपजे विशेष तापमान पर खौलाने के बाद जिस खास अंदाज से घंटों इसे घोंटा जाता है वही बर्फ़ी का विशिष्ट जायका पैदा करता है। इसी विशेष जायके

शहर के उत्तरी छोर पर, बरगदवा चौराहे पर, बुढ़ऊ चाचा की बर्फी की दुकान एक किंवदंती है। 1960 के दशक से, यह दुकान न केवल स्थानीय लोगों बल्कि पूर्वांचल और नेपाल तक के लोगों के दिलों में मिठास घोल रही है। अपनी अद्वितीय, हल्की मिठास के लिए प्रसिद्ध, बुढ़ऊ चाचा की बर्फी शुद्धता और गुणवत्ता का प्रमाण है। आधुनिक प्रतिस्पर्धा के बावजूद, उनकी लोकप्रियता बरकरार है, जो छह दशकों से स्वाद के जादू को कायम रखे हुए है।

की वजह से क्या बूढ़ा, क्या जवान और क्या महिलायें सभी के जुबान पर इनके स्वाद का नशा सा है। हर उम्रवय के ग्राहकों का इनके यहाँ तांता लगा रहता है।

सैकड़ों रुपये किलो की बर्फ़ी देखते-देखते बिक जाती है। छः दशकों से अधिक के सफर के बाद दुकान की बनी बर्फ़ी के स्वाद पर समय का असर बिल्कुल नहीं दिखता। ऐसा लगता है कि जैसे साठ की दशक वाला स्वाद आज भी बना हुआ है।

इलाके में दसियों साल से मोटर गैरज चला रहे मैकेनिक रामनिवास भी बुढ़ऊ चाचा के बर्फ़ी के स्वाद के दीवाने है। वित्त व्यवसाय से जुड़े प्रवीण तिवारी तो इनकी मिठाइयों के इतने दीवाने है कि व्यवसाय के सिलसिले में जब निकलते है तो इनकी मिठाई साथ रखना नहीं भूलते हैं।

प्रवीण तिवारी, इंवेस्टमेंट कंसल्टेंट

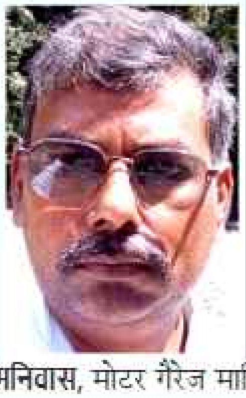

रामनिवास, मोटर गैरेज मालिक

अचीवर्स

कला में ही रच-बस जाना चाहती हूं

श्रेयांशी श्रीवास्तव

डॉ ऋचा अग्रवाल

रिपोर्टर - गोरखपुर ईस्ट न्यूज

रूरल न्यूज नेटवर्क

जीवन में बहुत कुछ गढ़ा जा सकता है बस एक कलाकार को छोड़कर। क्योंकि वास्तव में कलाकार जन्मजात होता है। पैदा होने के बाद जैसे-जैसे कलाकार की उम्र बढ़ती है वैसे-वैसे ही उसकी कला के बीज अंकुरित होने लगते है। इर्द-गिर्द अगर कोई पारखी हो तो वो उसे समय से परख लेता है। ऐसा ही कुछ हुआ एक नन्ही पैदाइशी कलाकार श्रेयांशी के साथ। इंजीनियर पिता और घरेलू महिला रूपी माँ की दूसरी संतान के रूप में जब श्रेयांशी का जन्म हुआ तो घर में किसी ने सोचा भी नहीं था कि परंपरागत शिक्षा को अहमियत देने वाले परिवार में एक परंपरा से इतर इबारत गढ़ने वाली कलाकार पैदा हुई है। बहरहाल समय बदला श्रेयांशी बड़ी हुई। 4-5 साल की उम्र में ही जब वो बाथरूम जाती थी तो वहाँ जी भर कर अपने सुरलय में गाना गाती थी। कलाप्रेमी पिता ने प्रोत्साहित करते हुए एक बार कहा कि बेटा तुम अंदर इतना बढ़िया गाती हो तो फिर बाहर क्यों नहीं गाती। बकौल श्रेयांशी बस उस दिन पिता के शब्दों से मिली ऊर्जा ने उसे यह तय करा दिया कि उसे परंपरागत भविष्य नहीं बनाना है। 6 साल की उम्र में उसे मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कालेज अब मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मंच पर पहली बार डांस करने का मौका मिला जहां से उसके पापा ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की थी। हौसले ने उछाल मारी और उसने 8-9 साल की उम्र में रोटरी क्लब के मंच पर पहली बार अकेले गाना गया। फिर क्या था पिताजी के जरिए पूज्य दादाजी के सांस्कृतिक रुझान ने तीसरी पीढ़ी में उसे ऊर्जा दी और उसी ऊर्जा के नाते कला और उसके विविध

मेरा मानना है कि बच्चों का कैरियर और पैशन जब एक हो तो उनके लक्ष्य प्राप्ति की ललक कई गुना बढ़ जाती है। लिहाजा कैरियर की गारंटी भी बढ़ जाती है।

- प्रवीर आर्या
पिता

बच्चों के रुझान के अनुकूल चुना गया भविष्य अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित माना जाता है। मुझे पूरा विश्वास है कि श्रेयांशी बेहतर करेगी।

- नम्रता श्रीवास्तव
माता

कहा जाता है, कलाकार जन्मजात होते हैं। इंजीनियर पिता और गृहणी माँ की बेटी श्रेयांशी के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। बचपन में बाथरूम में गाने से लेकर, इंजीनियरिंग कॉलेज के मंच तक, श्रेयांशी के हुनर को उसके पिता ने पहचाना। आज, भातखंडे संगीत विश्वविद्यालय में कथक सीख रही श्रेयांशी, कला के क्षेत्र में भविष्य को लेकर आशान्वित है, और दूसरों को भी अपने हुनर को तराशने के लिए प्रेरित करती है।

मुझे विश्वास है कि उसके अंदर वो क्षमता है कि वो गैर परंपरागत क्षेत्र में भी कुछ अलग कर लेगी।

- दिव्यांशी
बहन

आयामों में वर्तमान को सौंप वो भविष्य के सपने बुनने लग गयी। कई महोत्सवों समेत कला मंचों पर कभी डांस तो कभी सिंगिंग तो कभी एक्टिंग की प्रस्तुतियाँ देने लगी। महानगर के लिटिल फ्लावर स्कूल से इंटर की पढ़ाई करने के बाद भी उसका इरादा शुरुआती दिनों की तरह ही बरकरार रहा। हमेशा की तरह बड़ी बहन, पापा-मम्मी ने उसकी रुझान को देखते हुए उसे अवसर दिया और आज वो भातखंडे संगीत विश्वविद्यालय, लखनऊ से कथक मे पढ़ाई कर रही है। इस दौरान अलग-अलग प्रोडक्शन हाउस से उसके गाये हुए तीन गानों के एल्बम भी आ चुके है। कला क्षेत्र को युवाओं के कैरियर के लिए सुरक्षित न मानने वालों के लिए श्रेयांशी का दो टूक कहना है कि समय के बदलते दौर मे जैसे बहुतेरे परिभाषाएं बदली वैसे ही इस क्षेत्र में भी बदली है। बिरजू महाराज को अपना आदर्श मानने वाली श्रेयांशी का मानना है कि आज के दौर में ठौर वही पाएगा जिसमें हुनर होगा। हुनर के लिए पैदाइशी गुणों को शिक्षा और अभ्यास के माध्यम से तराशना एक कलाकार का धर्म भी है और कर्तव्य भी। लिहाजा मैं उसे ही निभा रही हूँ। रही बात भविष्य की तो कुछ भविष्य के लिए छोड़ देना चाहिए और कर्म करना चाहिए। कला क्षेत्र में टीचिंग को सुरक्षित कैरियर मानते हुए भी श्रेयांशी कला की हिन्दुस्तानी शास्त्रीयता और पाश्चात्यता में प्रयोगधर्मिता की पक्षधर हैं।

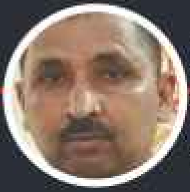

दुर्गेश पाण्डेय
रिपोर्टर- चरगांवा न्यूज
रूरल न्यूज नेटवर्क

धरती चीर के प्रगट हुई थीं गोलघर की काली माँ

शहर के बीचों-बीच, गोलघर स्थित काली माँ का मंदिर आस्था का प्रतीक है। दशकों पहले जंगल में माँ के मुखड़े की आकृति निकलने से शुरू हुई पूजा, आज भी भक्तों की मुरादें पूरी करती है। नवरात्र में यहां मेला लगता है, जहां दूर-दूर से भक्त आते हैं।

महानगर में यूं तो माँ भगवती की अनेकानेक मंदिर हैं। लेकिन गोलघर स्थित काली माँ के मंदिर का महत्व ही कुछ और है। यहाँ की माँ काली के बारे में मान्यता है कि सच्चे मन से मांगी गयी भक्तों की हर मुराद पूरी होती है। शहर के बीचों-बीच गोलघर इलाके में स्थित इस मंदिर के प्रति इलाकाइयों में अगाध श्रद्धा है। मंदिर वाले स्थान पर आज से कई दशक पहले जंगल हुआ करता था। मान्यता है कि एक बार धरती से माँ के मुखड़े की आकृति निकली थी। जैसे ही यह बात अगल-बगल के इलाके में पहुंची श्रद्धालुओं का हुजूम माँ भगवती के इस मुखड़े की पूजा के लिए उस स्थान पर एकत्र हो पूजा-अर्चना करने लगा। इसी स्थान पर कालांतर में मंदिर स्थापित किया गया। जो आज भी श्रद्धालुओं की आस्था और विश्वास का प्रतीक बना हुआ है।

गोलघर स्थित काली मंदिर जिला मुख्यालय से करीब एक

भक्तों की हर मनोकामना पूरी करती हैं मां काली। यही वजह है कि यहाँ बड़ी तादाद में भक्त आते है और मन्नत मांगते हैं।

विजय सैनी, पुजारी

हम चार पीढ़ियों से मंदिर व्यवस्था से जुड़े हैं और 1972 में मंदिर को भव्य स्वरूप दिया गया।

सुरेंद्र जायसवाल
अध्यक्ष, मंदिर प्रबंधन समिति

हम बचपन से मां की पूजा अर्चना करते आएं है और सच्चे मन से मांगी गई हर मुराद पूरी करती हैं मां काली।

दीपक जायसवाल
बैटरी व्यवसायी

हेरिटेज

किमी की दूरी पर है। सुबह मंदिर के पट खुलते ही मां के दर्शन को भक्तों की लंबी कतार लग जाती है। वहीं बात अगर नवरात्र की करें तो मंदिर के आसपास मेले जैसा माहौल हो जाता है।

पूजन सामग्री और प्रसाद की दर्जनों दुकानें यहां सजती हैं। भक्त दूर-दूर से आकर माता के दर्शन कर विधि-विधान से पूजा अर्चना करते हैं। सुख-समृद्धि की कामना करते हैं।

नगर निगम के उपसभापति रहे और मंदिर प्रबंधन समिति के अध्यक्ष सुरेन्द्र जायसवाल की मुताबिक मंदिर व्यवस्था से जुड़ी यह उनकी चौथी पीढ़ी है। इनके पूर्वज लाला रामवतार शाह ने 1924 में इलाकाइयों की बढ़ती आस्था को देखकर मुखौटे वाले स्थान पर एक छोटा सा मंदिर बनवाया। इसके बाद उनके पुत्र जंगी लाल जायसवाल को सपना आया कि मंदिर को भव्य बनाओ। जंगीजी ने 1972 में मंदिर को भव्य स्वरूप दिया। जिस जगह जमीन से निकली प्रतिमा थी। उस स्थान पर काली मां की एक भव्य प्रतिमा स्थापित की गई। तभी से वहाँ पूजा-पाठ का जो सिलसिला शुरू हुआ वो आज तक जारी है। मंदिर में पूजा-पाठ की ज़िम्मेदारी एक सैनी परिवार करता है जिनहे मेरे कर रही है। कुनबा बड़ा होने के नाते अब इनके तीन परिवार है जो एक-एक हफ्ते की आवृत्ती में सेवा देते है। इस परिवार के विजय सैनी का मानना है कि भक्तों की हर मनोकामना पूरी करती हैं मां काली। यही वजह है कि यहाँ बड़ी तादाद में भक्त आते है और मन्नत मांगते हैं।

मंदिर में स्थापित काली माँ की प्रतिमा के बारे में ऐसी मान्यता है कि सुबह, दोपहर और शाम में काली मां की प्रतिमा के स्वरूप में बदलाव होता है।

मंदिर के ठीक बगल स्थित माँ कालीजी के भक्त और बैटरी व्यवसायी दीपक जायसवाल का भी मानना है कि हमलोग तो माँ की पूजा देखते-देखते ही बड़े हुए। इतना जरूर कह सकते है कि सच्चे मन से मांगी जाने वाली हर मुराद पूरी होती है।

YOUR EYES ARE PRECIOUS FOR US

श्री राम जानकी नेत्रालय

रेटिना (आंख का पर्दा) ग्लॉकोमा (समलबाई) व एडवांस फेको (लेन्स प्रत्यारोपण) सर्जरी हेतु उत्कृष्ठ संस्थान

निकट ए.डी. चौक,
जुबली रोड, गोरखपुर - 273001
फोन नंबर - 05512205125, 9621662888

33 कसया रोड सेंट्रल बैंक
के पीछे बेतियाहाता, गोरखपुर - 273001
फोन नंबर 8127910234

समय - प्रातः 10:30 बजे से सायं 7:00 बजे तक शनिवार अवकाश

21 वर्षों से सेवारत पूर्वांचल का सुपर स्पेशलिटी नेत्र संस्थान

Consult with us-

चैरिटी सर्विसेज
प्रत्येक शुक्रवार बेतियाहाता परिसर में

डॉ. दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव

M.S. (Ophthamology) F.V.R.S., F.G.O.
F.I.C.O. Cambridge (U.K.)
फेलो अरविन्द आई. इंस्टीट्यूट, मदुरई
Vitreoretinal Surgeon
रेटिना रोग विशेषज्ञ व रेटिना सर्जन

डॉ. श्रीमती पंखुरी जौहरी

D.N.B (Ophthamology), MNAMS
F.I.C.O. Cambridge & London (U.K.)
फेलो अरविन्द आई. इंस्टीट्यूट, मदुरई
Phaco & Glaucoma Surgeon
Specialist in Diabetic Retinopathy
Laser Surgery
फेको, Refractive IOL व ग्लोकोमा विशेषज्ञ

रेटिना सर्विसेज

1. रेटीना सर्जरी
- मेडिकल ट्रीटमेंट
- एंजियो OCT
- एंजियोग्राफी FFA
- अल्ट्रासाउंड B-Scan

2. लेजर सर्जरी
- Yellow MultiSpot Laser
- Green Laser, Red Laser TTT
- रेटिना की ERG, EOG, VEP

ग्लूकोमा सर्विसेज

1. ग्लूकोमा सर्जरी
- मेडिकल Treatment
- Standard ग्लूकोमा सर्जरी
- Valve Implantation
- Pediatric Glaucoma Surgery
- Laser Surgery

2. Automated Perimetery
3. Pachymetry
4. RNFL, GCL, Disc, Analysis on OCT
5. UBM - Ultrasound
6. Yag laser

फेको एंड आई IOL सर्विसेस

1. साधारण Lens प्रत्यारोपण
2. Advanced IOL
- Multifocal Lenses
- Trifocal Lenses
- Extended Depth Lenses
- Toric Lenses
- ARMD Lenses
- Piggi Back Lenses

3. ICL, IPCL (चश्मा उतारने हेतु लेन्स प्रत्यारोपण)

प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत समस्त
नेत्र चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध

Our Speciality :

- World Class technology
- Advanced Surgeries
- Experienced medical Doctors
- Affordable Cost

फिर से दूध पिलाएगी पराग डेयरी

दिग्विजय सिंह

एडिटर- पिपरौली न्यूज, रूरल न्यूज नेटवर्क

गोरखपुर और आसपास के इलकाइयों को न्यूनतम दर पर दूध मुहैया कराने के लिए 1967 में महानगर से लगभग 4 किलोमीटर की दूरी पर 20 हजार लीटर दूध की खपत वाले पराग डेयरी प्लांट की स्थापना की गई थी। बाद में 2019 में इसकी जगह 1 लाख लीटर की क्षमता वाला नया प्लांट (लागत मूल्य) लगाया गया। लेकिन शासन-सत्ता की बेरुखी और अधिकारियों की अकर्मण्यता के चलते यह प्लांट मुश्किल से तीन साल की उम्र भी पूरी नहीं कर पाया और बंद हो गया। अब इसे नेशनल डेयरी फेडरेशन को लीज पर देकर एक बार फिर से चलाये जाने की चर्चा है। अब ऐसा लग रहा है कि दुग्ध उत्पादकों और इलकाइयों के चेहरे फिर से चमकेंगे। डेयरी की स्थापना से क्षेत्र के दुग्ध उत्पादक किसान अपने दूध को डेयरी में बेचकर परिवार का भरण पोषण करते थे। इलाकाई सांसद रहे योगी आदित्यनाथ के सूबे के मुख्यमंत्री बनने के बाद शासन द्वारा दूध उत्पादक किसानों की आय बढ़ाने के लिए करोड़ों की लागत से एक लाख लीटर दूध प्रतिदिन खपत क्षमता वाली पराग डेयरी का नया प्लांट बनाया गया। इसके दूध की व्यवस्था के लिए 11अप्रैल 2019 को तत्कालीन मुख्य महाप्रबंधक ने अयोध्या में मेसर्स आईडीएमसी के अधिकारियों संग बैठक में यह सहमति बनाई कि प्लांट को सुचारू रूप से चलाने के लिए गोंडा,फैजाबाद और अयोध्या दुग्ध संघ प्रतिदिन 40से50हजार लीटर दूध पराग डेयरी को देगा। इस व्यवस्था के तहत बस्ती दुग्ध संघ 10 से 15 हजार लीटर दूध प्रतिदिन भेजने लगा। लेकिन गोंडा और अयोध्या ने इस पर अमल नही किया। नतीजतन इस प्लांट पर खतरे के बादल

परांग डेयरी के निकट के गांव छपिया निवासिनी गृहिणी अर्चना मौर्या ने बताया कि पराग डेयरी से शुद्ध दूध एवं यहां दूध से बने गुणवत्तापूर्ण सामग्री आसानी से मिल जाती थी। डेयरी बंद हो जाने से अब शुद्ध सामग्री मिलना मुश्किल है। बाजार के सामानों में कितनी शुद्धता है,किसी से छिपी नहीं है।

अर्चना मौर्य, गृहिणी

शहर से मेरे पिता रामबदन यादव 1984से दुग्ध उत्पादन कर डेयरी को आपूर्ति करते आ रहे थे। वही काम अब हम लोग भी कर रहे थे। परिवार का खर्च इसी से चलता था। डेयरी बंद होने से हम लोगों का रोजगार चला गया।

बलराम यादव, सचिव, पाजूपार हाटा दुग्ध संघ सहकारी समिति

दुग्ध उत्पादन कर एव किसानों से दूध इकट्ठा कर डेयरी को देना ही मुख्य व्यवसाय था। डेयरी बंद होने से बेरोजगार हो गए। डेयरी को लीज पर देने से अब उम्मीद भी खतम हो गया।

अखिलेंद्र शुक्ल, सचिव, पिपराखुर्द उरुवा बाजार दुग्ध संघ समिति

मडराने लगे। पुराने प्लांट में भी कभी 10/12हजार लीटर से अधिक दूध की व्यवस्था नहीं हो पाती थी। लिहाजा नए प्लांट को कम दूध पर चलाने में आय की अपेक्षा व्यय ज्यादा होने लगा। इससे किसानों और कर्मचारियों का बकाया बढ़ता गया। बकाए के कारण बाद में किसानों ने दूध की आपूर्ति कम कर दिया। जिससे देवरिया,महराजगंज, कुशीनगर और गोरखपुर से प्रतिदिन 20 से 25 हजार लीटर दूध की होने वाली आपूर्ति घटकर 700 से 1000 लीटर तक पहुंच गई। इस स्थिति में 1 जून 2023 आते-आते प्लांट पर किसानों, कर्मचारियों और अन्य का करीब 6.25 करोड़ रुपया का बकाया हो गया। प्लांट का प्रभार देख रहे गोंडा डेयरी के जी एम इंदु भूषण सिंह स्थानीय व्यस्तता के चलते गोरखपुर डेयरी में समय नहीं देते थे। लिहाजा कर्मचारियों में कार्य के प्रति उदासीनता बढ़ती गई,और उत्पादन घटता गया और अंततः प्लांट में 1 जून 2023 को बंद हो गया। ताला बंदी रूपी बंदी की जानकारी मिलने पर 21जून 2023को पशुपालन एव दुग्ध विकास मंत्री ने आश्वस्त किया कि डेयरी प्लांट किसी भी हाल में बंद नहीं होने दिया जाएगा। बंदी के विरोध में गोरखपुर मंडल के चारो जिले के पंजीकृत और प्रस्तावित करीब 900 दुग्ध सहकारी समितियों के प्रतिनिधियों ने कई दिन तक विरोध प्रदर्शन भी किया। किसानों ने 22जून 2023को पराग डेयरी परिसर में कारखाना प्रबंधक बद्री सिंह बोरा, डेयरी के चेयरमैन रणजीत सिंह सहित कई अधिकारियों को घंटो बंधक बनाकर रखा। किसानों के विरोध को देखते हुए रेनू कुमारी को जी एम का प्रभार दिया गया। उनके द्वारा दी गई नई व्यवस्था के तहत ते हुआ कि यहां का दूध अयोध्या डेयरी को जायेगा,और वहा से घी,पनीर,दूध पैंकिंग आदि तैयार कर गोरखपुर के उपभोक्ताओं में वितरण किया जाएगा। यह सिलसिला कुछ समय तक चला। परंतु अयोध्या डेयरी ने उधार देना बंद कर दिया। जिससे यहाँ आए दिन आपूर्ति ठप हो जाती है।30अगस्त 2024 को दिल्ली प्रदेश के पशुधन एवं दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह और नेशनल डेयरी फेडरेशन के चेयरमैन मिनेश शाह ने एक बैठक में पराग डेयरी को लीज पर देने का निर्णय लिया। इस संदर्भ में पराग डेयरी की जी एम रेनू कुमारी ने पूछने पर बताया कि इस प्लांट को नेशनल डेयरी फेडरेशन को लीज पर देने की चर्चा चल रही है।जिसे देखने के लिए 11अक्तूबर को पांच सदस्यीय टीम आई थी।

स्प्रिंगर पब्लिक स्कूल

किरन पाण्डेय
रिपोर्टर- चरगांवा न्यूज
रुरल न्यूज नेटवर्क

शिक्षा की नई परिभाषा गढ़ता एक संस्थान

यूं तो गोरखपुर में शिक्षा के बहुतेरे केंद्र है जहां यूपी बोर्ड, सीबीएससी और आईसीएससी बोर्ड के माध्यम से बच्चों को स्तरीय शैक्षिक सुविधाएं मुहैया कराई जा रही हैं। लेकिन इन विद्यालयों में भी कुछ चुनिंदा ऐसे विद्यालय हैं जहां बच्चों को

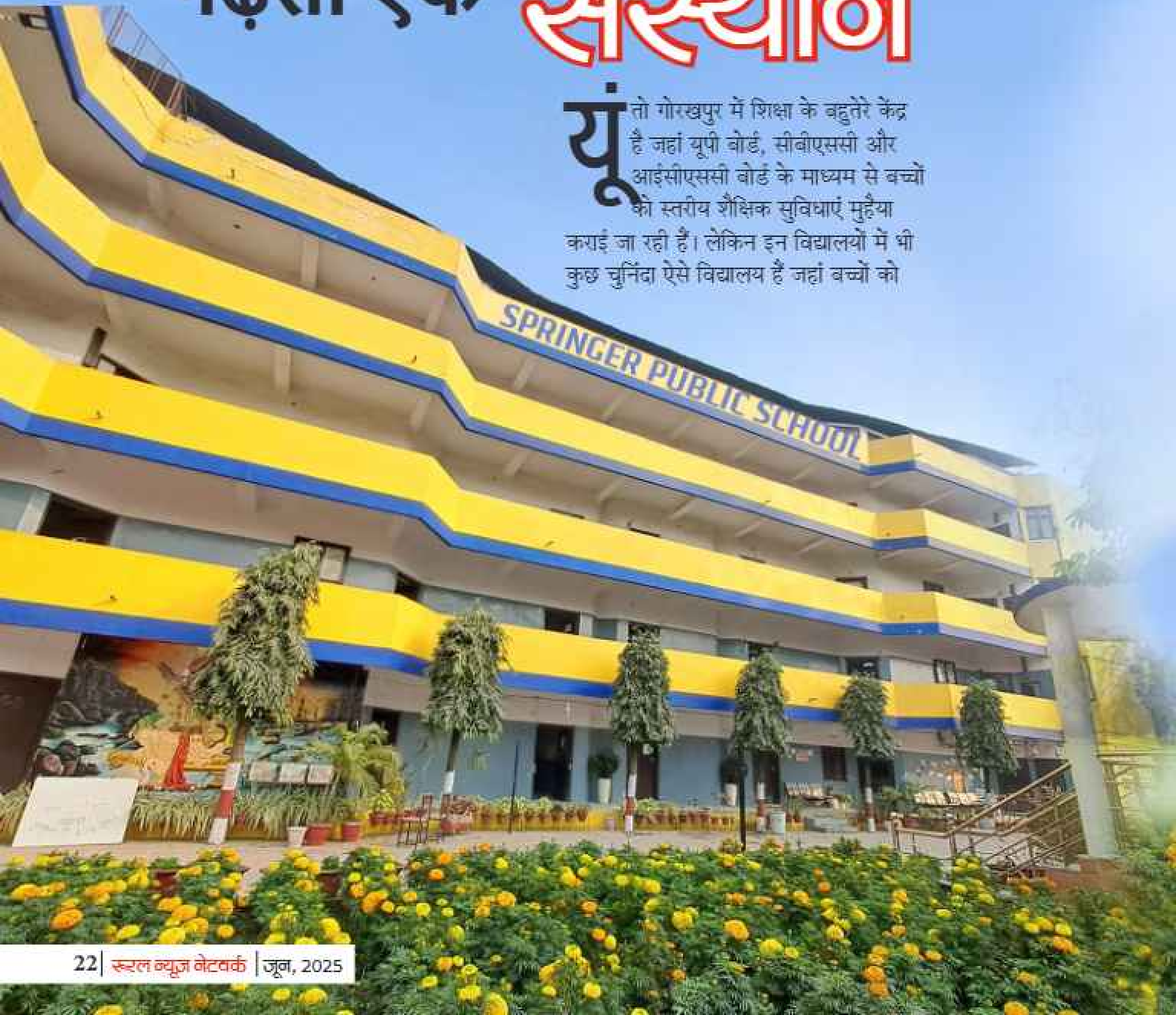

गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन के साथ

शिक्षा के साथ-साथ बहुतेरे अन्य गतिविधियां भी कराई जाती है जिनसे अमूमन बच्चा घर से बाहर तक महरूम रहता है। ऐसा ही एक विद्यालय है स्प्रिंगर पब्लिक स्कूल।

1998 में स्थापित इस विद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों के मूल में है संस्कार। वो संस्कार जो एक मनुष्य को वास्तविक सफलता के मुकाम तक पहुंचाने में सहायक है। लगभग दो एकड़ क्षेत्रफल में फैले इस विद्यालय में प्लेवे से लेकर बारहवीं तक की शिक्षा आईसीएससी बोर्ड के माध्यम से प्रदान की जाती है। ऐसे समय में जब विद्यालयों मे खेल के मैदान तक का अभाव है यहाँ खुली हरियाली वाला मैदान के साथ-साथ स्विमिंग पूल व विभिन्न तरह के खेल-कूद कराए जाते है। समय-समय पर बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण और व्यक्तित्व विकास संबंधी मनोवैज्ञानिक परीक्षण और परामर्श आदि कार्यक्रम भी कराए जाते हैं।

अर्जुन वैभव श्रीवास्तव
डायरेक्ट

शिप्रा वैभव श्रीवास्तव
सचिव

छात्रों को गढ़ने वाले

तुषार नंदी
प्रिंसिपल

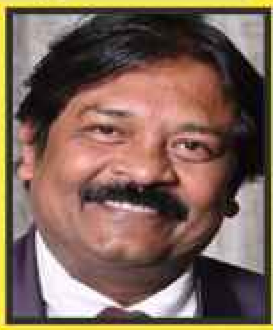

पंकज राय चौधरी
शिक्षक

शहर के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान स्प्रिंगर पब्लिक स्कूल ने अपने अलग पहचान और उत्कृष्टता के लिए एक नया मानक स्थापित किया है। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की पूर्व सदस्य और स्कूल के सचिव शिप्रा वैभव श्रीवास्तव की मुताबिक 'हमारा उद्देश्य बच्चों को सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का अवसर देना है। इसी सोच के साथ हमने स्कूल में आईआईटी मद्रास स्कूल कनेक्ट प्रोग्राम, कैरियर पॉइंट कोटा के साथ इंटीग्रेटेड प्रोग्राम और संवेदनशील नेतृत्व प्रशिक्षण जैसी पहल शुरू की हैं। खेल, कला, विज्ञान और तकनीक – हर क्षेत्र में विद्यार्थियों को मंच देना हमारी प्राथमिकता है।'

आईआईटी जोधपुर से शिक्षा प्राप्त निदेशक अर्जुन वैभव श्रीवास्तव B.Tech,MBA,PG in Data Engg (IITJodhpur) ने स्कूल के भविष्य की योजनाओं की जानकारी देते हुए बताया कि हम स्प्रिंगर को आने वाले समय में पूर्वांचल का पहला फ्यूचर रेडी स्कूल बनाना चाहते हैं, जहाँ AI, डेटा साइंस, इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे आधुनिक कोर्सेज स्कूल स्तर पर ही मुफ्त में उपलब्ध होंगे। इसके अलावा हम इंटरनेशनल एक्सचेंज प्रोग्राम और स्टार्टअप इनक्यूबेशन सेंटर की स्थापना पर भी काम कर रहे हैं, ताकि हमारे बच्चे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकें।'

TAG 2023 में 'बेस्ट हेड ऑफ द स्कूल' का अवार्ड पा चुके स्कूल के प्रिंसिपल तुषार नंदी का मानना है कि हमारे स्कूल की सबसे बड़ी विशेषता है – 'व्यक्तिगत देखभाल और भविष्य निर्माण की प्रतिबद्धता'। हमारे शिक्षक सिर्फ पाठ्यक्रम नहीं पढ़ाते, वे बच्चों को सोचने, सवाल करने और खुद समाधान खोजने की प्रेरणा देते हैं। यही हमें अन्य संस्थानों से अलग बनाता है।'

महानगर में गणित के प्रतिष्ठित शिक्षकों में शुमार और TAG 2023 में 'बेस्ट टीचर अवार्ड' से सम्मानित शिक्षक पंकज रॉय चौधरी की मुताबिक 'स्प्रिंगर में शिक्षा सिर्फ अंक लाने का माध्यम नहीं है, बल्कि यहाँ सोचने, समझने और उसे लागू करने की कला सिखाई जाती है। हम बच्चों को समस्याओं को सुलझाने वाला दृष्टिकोण देते हैं। स्कूल का माहौल सकारात्मक, प्रेरणादायक और नवाचार को बढ़ावा देने वाला है। कक्षा X में 95% और कक्षा XII में 96.75% (PCB स्ट्रीम) अंक प्राप्त करने वाले स्कूल के छात्र आर्यन कुमार भी मानते है कि स्प्रिंगर में शिक्षा का तरीका बच्चों को केवल परीक्षा तक सीमित नहीं करता, बल्कि जीवन में वास्तविक सफलता की दिशा में प्रेरित करता है। यहाँ की कड़ी मेहनत और व्यक्तिगत मार्गदर्शन से अपनी पढ़ाई में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने में मदद मिलती है।

होनहार छात्र

अनुभव कुमार

आर्यन कुमार

गोरखपुर का स्प्रिंगर पब्लिक स्कूल शिक्षा, संस्कार और नवाचार का एक अद्वितीय संगम है, जहाँ छात्रों को सिर्फ किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन कौशल, नेतृत्व और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की तैयारी भी कराई जाती है।

आधुनिक सुविधाओं, उत्कृष्ट शिक्षकों और फ्यूचर रेडी विजन के साथ यह विद्यालय छात्रों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार कर रहा है सफलता की संपूर्ण पाठशाला बनकर।

बिना किसी कोचिंग के कक्षा XII में 94.75% अंक और IIT JEE MAIN 2025 में 99.5%ile प्राप्त करने वाले छात्र अनुभव श्रीवास्तव की मुताबिक स्प्रिंगर का वातावरण और शिक्षक हमें आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। मैंने बिना किसी कोचिंग के IIT JEE MAIN में जो भी पोजीशन अर्जित की वो सिर्फ स्कूल के अद्वितीय पाठ्यक्रम और मार्गदर्शन के कारण ही संभव हुआ।'

स्प्रिंगर पब्लिक स्कूल आज शिक्षा के क्षेत्र में अपने अलग दृष्टिकोण और उत्कृष्ट परिणामों के साथ एक प्रेरणा बनता जा रहा है।

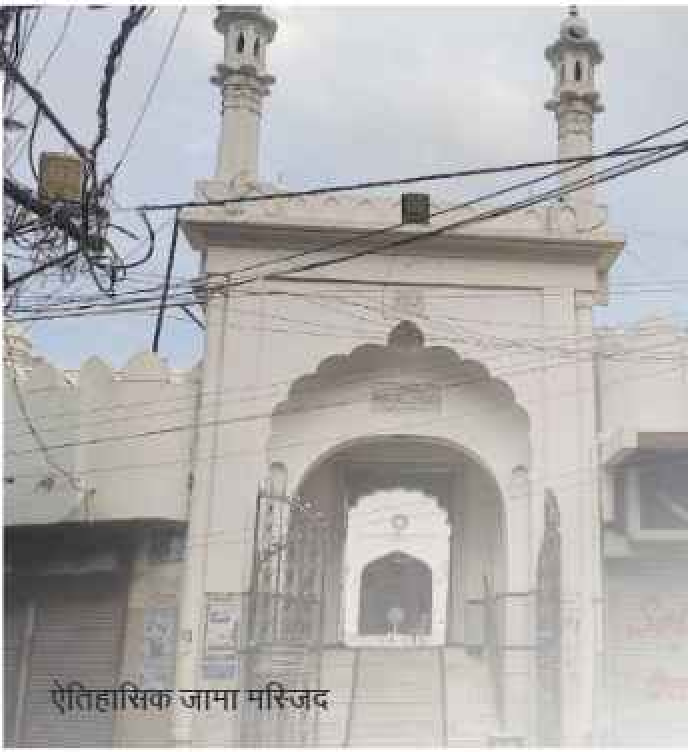

ऐतिहासिक जामा मस्जिद

शाहमारूफ़

शहर का अमीनाबाद

विनय रंजन तिवारी

एडिटोरियल कोआर्डिनेटर- रूरल न्यूज नेटवर्क

शहर के जिन मुहल्लों का नाम पुराने गोरखपुर में शामिल माना जाता है उनमें शाहमारूफ़ मुहल्ला का नाम भी एक है। इस मुहल्ले की खासियत ये है कि इसकी पहचान के मुहल्ले की तुलना में बाजार के रूप में ज्यादा है। माहे रमजान के अंत में खासकर चांदरात का बाजार यहां बहुत भव्य होता है। जबकि ईद के बाजार की रौनक भी यहा दिखती है। यही वजह की इस रौनक को देखकर लोग इसकी तुलना लखनऊ के अमीनाबाद से करते हैं। कुछ तो इसे गोरखपुर शहर का अमीनाबाद कहते भी हैं। यहां पर ईद-उल-अजहा पर्व के दौरान कुर्बानी के जानवरों का बाजार भी लगता है। इस बाजार में जरुरत की तमाम चीजें थोक व फुटकर दामों में विकती हैं। इस मुहल्ले में कई तारीखी मजारें और मस्जिदें हैं। यहां मुसाफिरों के ठहरने के लिए मुस्लिम मुसाफिर खाना भी है।

मोहल्ले का नाम शाहमारूफ़ होने के पीछे भी

कहानी है। इस नाम का ताल्लुक एक सूफी संत हजरत सैयद शाह मारूफ अलैहिर्रहमां के नाम से है। इन्ही के नाम पर इस मोहल्लों का नाम पड़ा। सूफी वहीदुल हसन की किताब 'मसायख-ए-गोरखपुर' के पेज संख्या 33, 34 व 35 पर हजरत सैयद शाह मारूफ अलैहिर्रहमां का जिक्र है। वह लिखते हैं कि इस शहर के मशहूर रईसों में रईस बुजुर्ग हजरत सैयद शाह मारूफ अलैहिर्रहमां भी रहे हैं। इनके खानदान के बारे में कहा जाता है कि इनका खानदान अरब से यहाँ आया था।

इनके पिता हजरत सैयद शाह अब्दुर्रहमान मुगल बादशाह मुअज्जम शाह के शासनकाल में गोरखपुर तशरीफ आए थे और उसके बाद यहीं के होकर रह गए। वर्तमान में इनकी 33वीं पीढ़ी चल रही है। मोहल्ले का नाम उनकी शख्सियत की वजह से मशहूर है। उनसे जुड़ी खिरका, रुमाल, पगड़ी, जुब्बा जैसी कई चीजें आज भी यहां मौजूद हैं।

इसी मुहल्ले में उनकी मजार भी है। हर साल उर्स-ए-पाक भी होता है। आपके खानदान की एक शाख मोहल्ला अलीनगर में भी आबाद है। हजरत सैयद शाह मारूफ के खानदान के बारे में मियां साहब सैयद अहमद अली शाह ने अपनी किताब 'महबूब उत तवारीख' में लिखा है।

लगभग तीन दशकों से यहाँ रेडीमेड गारमेंट्स का व्यापार कर रहे **राशिद नूर** की मुताबिक यह मार्केट सस्ते सामानों के लिए जाना जाता है। सामान होलसेल रेट पर मिलते हैं। मुख्यतः यहाँ रेडीमेड कपड़े, जूता-चप्पल, कासमेटिक का सामान मिलता है। पहले ये बिजली के सामानों के लिए भी मशहूर था लेकिन अब वो मार्केट यहाँ नहीं है।

युवा व्यवसायी **अहमद गजाली** की मुताबिक शाहमारूफ़ मार्केट की ख़ास बात यह है कि यहाँ के ज्यादातर दुकानदार और ग्राहक दोनों ही युवा पीढ़ी से हैं, और यहाँ ट्रेंडिंग डिजाइनों वाले कपड़े उचित दामों पर उपलब्ध कराए जाते हैं।

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता और इलाके का कई टर्म से प्रतिनिधित्व कर रहे जनप्रिय पार्षद **जियाऊल इस्लाम** की मुताबिक उनके इलाके में ही मुगल सम्राट शहजादा मुअज्जम शाह के आदेश पर सूबेदार खलीलुरहमान की देखरेख में तामीर कराई हुई मुगल स्थापत्य कला की बेजोड़ कृति रूपी प्रसिद्ध एतिहासिक जामा मस्जिद है। उनका यह इलाका पूरे पूर्वाञ्चल में कासमेटिक सामान, प्लास्टिक के बने सामान, रेडीमेड गारमेंट्स, चप्पल, बेल्ट, टोपी, चश्मा जैसे सामानों के होलसेल मार्केट के रूप में जाना जाता है। पार्षद मानते है कि उनके इलाके की सबसे बड़ी समस्या सड़क जाम की है। ●

दांतों की 'कंप्लीट डेंटल केयर'

क्षितिज राय
ब्यूरो चीफ- लीगल
रुरल न्यूज नेटवर्क

यूं तो ऊपरवाले ने शरीर को हर अंग को आवश्यकतानुसार ही बनाया है। कोई ये नहीं कह सकता है कि इस अंग की आवश्यकता नहीं है। लेकिन इन्ही में कुछ अंग ऐसे भी है जो औरों की तुलना में अधिक उपयोगी माने जाते है। मसलन आँख, दाँत, मुंह, नाक-कान-गला आदि। क्योंकि इनका इस्तेमाल हमारी नंगी आँखों से भी दिखता है। दाँत की बात करें तो ये भोजन को काट-काट कर छोटा कर या यूं कहे कि पीसकर अंतड़ियों तक भेजने का काम करता है। मौजूदा फास्ट फूड के दौर में इसकी अहमियत बढ़ गयी है। क्योंकि गलत फूड और गलत फूड हैबिट की वजह से इसके मरीजों मे लगातार इजाफा हो रहा है। ऐसे में दाँत के मरीज सस्ते और बेहतर इलाज के लिए परेशान रहते है। महानगर में पादरी रोड पर स्थित कंप्लीट डेंटल

यहाँ डाक्टर तो अच्छे हैं ही उनके सभी कर्मचारी भी बहुत अच्छे है। यही वजह है कि मेरे विद्यालय के चिकित्सकीय पैनल में यह केंद्र हैं।

डॉ ए.के.पाण्डेय
प्रिंसिपल- विकास भारती स्कूल, गोरखपुर

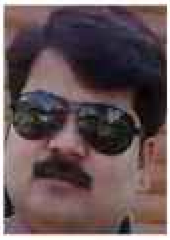

मैं और मेरे जान पहचान के तथा साथ ही मेरे कई नाते-रिश्तेदार डॉ. पटेल से ही अपना इलाज कराते हैं। हम सभी डॉ. पटेल के व्यवहार के कायल है।

अरविन्द
प्रबंधक, प्राइवेट बैंक, गोरखपुर

केयर दँत चिकित्सा का एक ऐसा केंद्र है जहां क्वालिफाइड चिकित्सकों की देखरेख में महानगरों जैसी चिकित्सा सुविधा उपलब्ध है। यहाँ संबन्धित अत्याधुनिक मशीने हैं। अस्पताल के निदेशक डॉ सौरभ पटेल डेंटल सर्जरी में मास्टर डिग्री MDS होल्डर है।

2017 से प्रेक्टिस कर रहे डॉ पटेल का सपना था कि महानगर में एक छत के नीचे दंत चिकित्सा से जुड़ी सभी व्यवस्था हो और यहाँ के मरीज को दाँत के इलाज के लिए बाहर महानगरों का रुख न करना पड़े। इसी सपने को पूरा करने की दिशा में वो लगातार प्रयासरत भी है। वर्तमान में उनके यहाँ रूट केनाल ट्रीटमेंट RCT, फ्रेक्चर, डेंटल इंप्लांट, सिंगल और पूर्ण माउथ ईप्लांट, स्माइल करेक्शन, फुल माउथ रिहाबिटेशन FMR जैसी जटिल चिकित्सा की सुविधा मौजूद है। आधे दर्जन से अधिक विशेषज्ञों की सेवाएँ यहाँ मौजूद है। डॉ सौरभ की मुताबिक महानगर में अधिकांश ऐसे मरीज आते है जो दांतों की जिनके दांतों में सही देखभाल के अभाव में कीड़े लग जाते है। उनका मानना है कि अगर बच्चों में शुरुआत से ही जंकफूड न खाने, ठीक से ब्रशिंग कराने और सुबह और सोने से पहले रात में ब्रश करने व कुल्ला-गलाला की आदत डाल दी जाये तो काफी हद तक दांतों की समस्या से बचा जा सकता है।

पूर्वाञ्चल के प्रतिष्ठित आवासीय विद्यालय विकास भारती स्कूल के प्रिंसिपल डॉ ए.के.पाण्डेय डॉ पटेल के चिकित्सा केंद्र के मुरीद है। उनका मानना है कि यहाँ डाक्टर तो अच्छे हैं ही उनके सभी कर्मचारी भी बहुत अच्छे है। यही वजह है कि मेरे विद्यालय के चिकित्सकीय पैनल में यह केंद्र हैं।

प्राइवेट बैंक में प्रबंधक अरविन्द भी डॉ पटेल के मरीज है और डाक्टर के चिकित्सा करने के तौर-तरीकों से पूरी तरह से संतुष्ट है। डॉ पटेल के व्यवहार के कायल हैं अरविन्द। उनके मुताबिक उनके सभी रिश्तेदार-नातेदार भी डाक्टर पटेल से ही इलाज करवाते हैं।

स्पेशलनामा

गीता प्रेस नो प्रॉफ़िट नो लास वाला धार्मिक प्रकाशन केंद्र

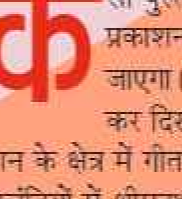

रवि कुमार पाण्डेय
रिपोर्टर- चरगांवा न्यूज
रुरल न्यूज नेटवर्क

किसी पुस्तक की सत्रह करोड़ प्रतियाँ यदि कोई प्रिंटिंग प्रेस या प्रकाशन छापता है तो निःसन्देह उसे एक रिकार्ड ही माना जाएगा। तो यह रिकार्ड है जिसे गोरखपुर के गीता प्रेस ने कर दिखाया है। वैसे भी पूरी दुनिया में धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन के क्षेत्र में गीता प्रेस,गोरखपुर की अपनी अलग पहचान है। हिन्दू धर्मावलंबियों में श्रीमदभगवतगीता की मान्यता एक आदर्श धर्मग्रंथ के रूप में है। इसको लेकर आम जनमानस में यह धारणा है कि दुनिया को जीवन का सार समझाने में यह ग्रंथ सर्वाधिक समर्थ है। यही वजह है कि श्रीमदभगवत

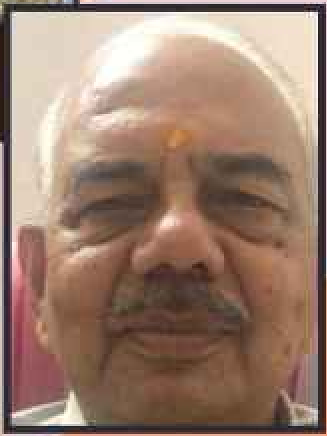

लालमणि तिवारी, प्रबंधक

गीता की लोकप्रियता अन्य धार्मिक पुस्तकों से कहीं अधिक है। अपनी स्थापना के सौ वर्ष पूरा कर चुके गीता प्रेस गोरखपुर ने श्रीमदभागवतगीता की अब तक लगभग 17 करोड़ प्रतियाँ छाप चुका है। जो किसी पुस्तक विशेष के प्रकाशन का अपने आप में एक रिकार्ड है।

सन 1923 में गोरखपुर के उर्दू बाजार में स्थापित हुए गीता प्रेस की भी अपनी स्थापना संबंधी एक रोचक कहानी है। सन 1921 में सेठ जय दयाल गोयंदका ने कोलकाता में एक गोविंद भवन ट्रस्ट की स्थापना की। इस ट्रस्ट के तहत वो गीता पुस्तक का प्रकाशन शुरू किए। पुस्तक की छपाई में अशुद्धियाँ न हो इसके लिए सेठ जी बड़ा ध्यान रखते थे। एक बार प्रेस मालिक ने उनसे कहा कि यदि आपको इतना शुद्ध और त्रुटि रहित गीता प्रकाशित करवाना है तो आप अपना प्रिंटिंग प्रेस लगवा लीजिये। बात सेठ जी को चुभ गयी। इसके लिए उन्होने गोरखपुर का चयन किया। यहाँ उर्दू बाजार में दस रुपया महीने के किराये पर प्रेस के लिए एक कमरा लेकर गीता का प्रकाशन शुरू कराया। कालांतर में गीता प्रेस की वर्तमान बिल्डिंग का निर्माण कराया गया। आज गीता प्रेस से 15 भाषाओं में गीता का प्रकाशन किया जाता है। इनमें हिंदी, संस्कृत, बंगला, मराठी, गुजराती, तमिल, कन्नड़, असमिया, उड़िया, उर्दू, तेलगू, मलयालम, पंजाबी, अंग्रेजी और नेपाली भाषाएं शामिल हैं।

गीता प्रेस के प्रवन्धक **लालमणि तिवारी** का मानना है कि जैसे गाय एक जानवर नहीं, तुलसी एक पौधा नहीं, गंगा एक नदी नहीं, वैसे ही गीता केवल एक पुस्तक ही नहीं है बल्कि गीता मानव मात्र के कल्याण का ग्रंथ है। यह ग्रंथ सार्वजनीन, सार्वभौमिक और सार्वकालिक ग्रंथ है। इसीलिए सेठ जयदयाल गोयंदका ने इसे सर्वसुलभ करने के लिए इसका प्रकाशन सस्ता करने के उद्देश्य से ही गीता प्रेस की स्थापना की थी। आज भी प्रेस इसी उद्देश्य के तहत संचालित है।

कोरोना के दौरान डॉ साहब का समर्पण देख मै ईश्वर से प्रार्थना करती थी कि समाज के हतोत्साहित करने वाले लोगों के बीच इनका उत्साह बनाए रखें। इनसे प्रेरित होकर अब मै भी सामाजिक कार्यों में लग गई हूँ।

- डॉ. रीता वर्मा, पत्नी

मुझे इस बात का फक्र है कि मैं एक ऐसे पिता का पुत्र हूँ जिनके अंदर इंसानियत कूट-कूट कर भरी है। कोरोना काल में उनकी सेवाएं देखकर आत्मसंतुष्टि मिलती थी।

ईंजी. तरुण वर्मा, पुत्र

ईश्वर से यही मनाती हूँ कि अगले जन्म में भी मुझे पापा की ही बिटिया बनाएं। पापा अपना अधिक समय नौकरी और समाजसेवा को देते है लेकिन हम सभी का भी भरपूर ख्याल रखते है।

सुश्री मांडवी राजवंशी, पुत्री

मरीज सेवा मेरी मानसिक खुराक है : डॉ. अरुण

डॉ. अरुण वर्मा
प्रभारी चिकित्साधिकारी, नगरीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, इलाहीबाग, गोरखपुर

अजय सिंह
रिपोर्टर- गोरखपुर ईस्ट न्यूज
रुरल न्यूज नेटवर्क

यूं तो चिकित्सक को धरती का भगवान कहा ही जाता है लेकिन उनमें भी कुछ ऐसे है जिन्होंने अपने लगन और निष्ठा से समाज से मिले इस विशेषण को बखूबी प्रमाणित भी किया है। ऐसे ही एक चिकित्सक है डॉ अरुण वर्मा। 1997 में पटना मेडिकल कालेज से पढ़ाई पूरी करने के बाद 2013 से उत्तर प्रदेश प्राथमिक की प्रांतीय चिकित्सा सेवा में रहते हुए वर्तमान में नगरीय स्वास्थ्य केंद्र, इलाहीबाग, गोरखपुर में प्रभारी चिकित्सक है।

समूची मानवता जब कोरोना के आगोश में त्राहि-त्राहि कर रही थी। हर कोई अपनी और अपने लोगों के जीवन सुरक्षित करने में रिश्ते की स्थापित मर्यादा को तार-तार कर रहा था। संयुक्त परिवार के आवरण में रहने वाले भी घर के स्वर्गवासी सदस्य को लावारिस छोड़ने को मजबूर थे। ऐसे में डॉ अरुण, जीवन की परवाह किये बगैर लगातार नागरिकों के जीवन संरक्षण में लगे रहे। आफ़लाइन ही नहीं आनलाइन भी लगे रहे। डॉ वर्मा की मुताबिक पूरे कोरोना काल में उन्होंने एक दिन भी अवकाश नहीं लिया। समाज ने भी और विभाग ने भी इनके इस तल्लीनता का भरपूर सम्मान किया। अनेकानेक संस्थाओं ने इन्हे सम्मानित किया तो विभाग ने इन्हे प्रशस्ति पत्र देकर प्रोत्साहित किया।

धरती के भगवान कहे जाने वाले डॉक्टरों में डॉ. अरुण वर्मा एक ऐसा नाम हैं जिन्होंने कोरोना जैसे संकट में भी नि:स्वार्थ सेवा से मानवता की मिसाल कायम की।

समाज में जहां गाँव-देहात के स्वास्थ्य केंद्रों के प्रति आम धारणा है कि वहाँ डाक्टर नहीं रहते, स्टाफ ठीक ढंग से काम नहीं करता, दवाइयाँ नहीं मिलती। ऐसी धारणा वालों की धारणा बदल जाएगी जो डॉ अरुण के केंद्र पर जाएंगे। पिपराइच की पहली तैनाती से लेकर जंगल धूसण, पुरदिलपुर, इस्लामचक, हुमायूँपुर, तारामंडल, बिछिया, सिविल लाइंस समेत मौजूदा इलाहीबाग तक का इतिहास इसका प्रमाण है। कहते है कर्म के प्रति समर्पण और ईमानदारी के पीछे व्यक्ति के संस्कार का अहम योगदान होता है जो माता-पिता और परिवार से मिलता है। परिवार में 5 भाइयों और 3 बहनों के बीच हुई परवरिश ने पिता के एक बेटे को समाज सेवा के लिए समर्पित करने की सोच को आत्मसात करने का साहस दिया। आज डॉ अरुण पिता के उन्ही सपनों को हकीकत में उतारने के लिए समर्पित है। यही वजह कि ऐसे भौतिकवादी समाज में भी उनके बच्चे दिल्ली-अमेरिका की बजाय अपने क्षेत्र और अपने लोगों के बीच अपना भविष्य देख रहे हैं।

मेकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर बेटा इंजी.तरुण वर्मा दिल्ली में नौकरी कर रहा है। भविष्य में घर के नजदीक ही कुछ करना चाहता है। वही बिटिया मांडवी राजवंशी ने गोरखपुर विश्वविद्यालय से कानून की पढ़ाई अभी पूरी की है। प्राकृतिक चिकित्सक पत्नी भी पूरी तरह धर्म और कर्म से इनकी सहयोगी है। डॉ वर्मा का भविष्य में बुजुर्गों, विधवाओं और अनाथ बच्चों के लिए एक आश्रम खोलने की योजना है। ●

गोरखपुर

सांसद–विधायक की अद्भुत ट्यूनिंग

संदीप कुमार सिंह
असिस्टेंट ग्रुप एडिटर
रुरल न्यूज नेटवर्क

गोरखपुर ही नहीं समूचे प्रदेश के इतिहास में एक क्षेत्र के सांसद और वहाँ के विधायक के बीच ऐसी ट्यूनिंग का उदाहरण आपको नहीं मिलेगा जैसा गोरखपुर क्षेत्र के सांसद रविकिशन और विधायक व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बीच देखने को मिलता है।

यूँ तो गोरखपुर शहर विधानसभा के विधायक और प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को नजदीक से जानने वाले बखूबी जानते है कि आमतौर पर वो गंभीर रहते हैं। वही गोरखपुर संसदीय क्षेत्र से बीजेपी सांसद और भोजपुरी फिल्मों के सुपरस्टार रविकिशन स्वभावतन एक बेहद संजीदा और हंसमुख इंसान है। लेकिन आप सभी को यह जानकर आश्चर्य होगा कि परस्पर विरोधी गुणों वाले इन दोनों

गोरखपुर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और सांसद रविकिशन की जुगलबंदी राजनीति में अनोखी मिसाल है—गंभीरता और विनोद से भरा यह तालमेल जनता को भी खासा पसंद आता है।

हम गोरखवासियों का सौभाग्य है कि जिन्हे हम गोरक्षपीठाधीश्वर के रूप में अपना परमपूज्य मानते है उनके प्रति अगाध श्रद्धा रखते है वही हमारे विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे है और वर्तमान में प्रदेश के मुख्यमंत्री है। इनके मुख्यमंत्री बनने के बाद गोरखपुर और आसपास के इलाके का अभूतपूर्व विकास हुआ है। नया गोरखपुर अन्य महानगरों की कतार में आ गया है। भोजपुरी सिनेस्टार रविकिशन का यहाँ से सांसद होना भी योगी आदित्यनाथ के आशीष का ही प्रतिफल है। ऐसे में इन दोनों मनीषियों के बीच अद्भुत संयोग व समन्वय का होना भविष्य में क्षेत्र के और बेहतर विकास की संभावनाएं जगाता है।

प्रो.गोविंद पाण्डेय

आचार्य-सिविल इंजीनियरिंग विभाग

मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर

ही सियासी मनीषीयों के बीच आपस में अद्भुत तालमेल है। अमूमन अपने सम्बोधन में सांसद रविकिशन योगी आदित्यनाथ को गुरुजी कह संबोधित करते है। इन दोनों के बीच व्यवहार का अद्भुत मुजाहरा तब होता है जब ये दोनों ही अपने गृह जनपद या क्षेत्र के सियासी कार्यक्रमों में मंच साझा करते है। ऐसे अवसरों पर अक्सर योगी आदित्यनाथ अपने प्रवृत्ति के विपरीत मंच से रविकिशन पर चुटकी लेना नहीं भूलते है। जून महीने के पहले सप्ताह में महानगर के नवनिर्मित कल्याणमंडपम का लोकार्पण कार्यक्रम में शिरकत करते समय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने उद्बोधन में सांसद पर चुटकी लेते हुए कहा कि रवि किशन जी ने अपने घर के पास इतनी जगह ही नहीं छोड़ी कि वहां लोगों को बुलाकर खाना खिला सकें। उनके पास पैसा है, 12-15 लाख रुपए खर्च कर सकते हैं. लेकिन गरीब आदमी ऐसा खर्च नहीं कर सकता, इसलिए हमने कल्याण मंडपम जैसी सुविधा दी है। ऐसा नहीं कि योगी आदित्यनाथ ने ऐसा पहली बार सांसद से चुहल किया बल्कि ऐसे कइयों उदाहरण है जब उन्होंने साँसद पर चुटकी लेते हुए उपस्थित जनसमूह के सामने हंसी ठहाके का माहौल बनाया। एकबार योगी आदित्यनाथ ने रविकिशन के घर को शीशमहल बताते हुए कहा था कि रामगढ़ताल के किनारे शीशमहल तो सासद जी का है। एक बार तो उन्होंने सभा में मौजूद जनता से ही पूछ लिया कि "रवि किशन की फिल्म कितने लोग देखते हैं? क्या वे फ्री में फिल्म दिखाते हैं?" और फिर मुस्कराते हुए बोले, "मैं रवि किशन से कहूंगा कि एक दिन फ्री में सबको फिल्म दिखाएं। जब सांसद रविकिशन को उनके फिल्म के लिए आईफा अवार्ड मिला था तब भी किसी कार्यक्रम में योगी आदित्यनाथ ने लोगों से पूछ लिया था कि साँसदजी ने दावत दी या नहीं। गोरखपुर चिड़ियाघर के कार्यक्रम में एकबार उन्होंने रवि किशन के लिए कहा कि "सांसद जी बाघ के पिंजरे में जाने को उतावले थे,

आज प्रदेश में डबल इंजन की सरकार विकास की नित नई इबारत गढ़ रही है। सीएम सिटी गोरखपुर, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की विकासवादी सोच व करिश्माई नेतृत्व तथा सदर सांसद रविकिशन के सहज सुलभ साथ तथा नेमफेम के आकर्षण में विकास और सुखद बदलाव का नया माडल बनकर उभरा है। इस बदलाव की बयार को हर दिशा हर कोने में महसूस किया जा सकता है। खास बात यह है कि यह विकास अंध विकास नहीं बल्कि पर्यावरण के साथ विकास का संतुलित नमूना है जो एक गंभीर नेतृत्व व मार्गदर्शन में पुष्पित–पल्लवित हो रहा है। रोड–रेल–एयर कनेक्टिविटी, साफ–सफाई, जलनिकासी, यातायात प्रबंधन, कानून व्यवस्था, शिक्षा–स्वास्थ्य, उद्योग, व्यापार आदि हर क्षेत्र में उल्लेखनीय और अविस्मरणीय प्रगति हुई है। विकास का गोरखपुर माडल एक ब्रांड बन चुका है। जो देश ही नहीं विदेशों में भी ललचाई नजरों से देखा जा रहा है। इसमें कहीं न कहीं इलाकाई मुख्यमंत्री और सांसद के बीच अद्भुत सामंजस्य का भी योगदान है।

दीप्तभानु डे

स्थानीय संपादक - राष्ट्रीय सहारा, गोरखपुर

लेकिन हमने उन्हें भाषण देने के लिए रोका.। ऐसे बहुतेरे मौके है जिसपर मुख्यमंत्री योगी की सांसद रविकिशन पर ली गई चुटकी ने उपस्थित जनता का भरपूर मनोरंजन किया है। सांसद रविकिशन भी ऐसे मौकों पर पूरा मनोविनोद करते है। उनके सबसे अधिक वायरल हुए एक वाकये में सांसद रविकिशन ने महानगर के किनारे बने राप्ती नदी के तट पर स्थित श्मशान घाट के लोकार्पण मौके पर मुख्यमंत्री की मौजूदगी में कहा कि जो इस श्मशान घाट में जलाया जाएगा, वह सीधे स्वर्ग जाएगा. मरने वाले को भी मज़ा आएगा। उपस्थित जनसमूह के साथ-साथ योगी इस पर इतनी ज़ोर से हंसे कि सिर झुकाकर माथे पर हाथ रख लिया। यह वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुआ था। गोरखपुर की जनता के लिए यह गर्व की बात है कि उनके पास ऐसे दो जनप्रतिनिधि हैं, जो न केवल क्षेत्र के विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं, बल्कि एक-दूसरे के साथ विश्वास और समर्पण से जुड़े हुए हैं। योगी आदित्यनाथ की आध्यात्मिक और प्रशासनिक शक्ति तथा रविकिशन की लोकप्रियता और जमीनी जुड़ाव, दोनों मिलकर गोरखपुर को एक नई दिशा में ले जा रहे हैं। इनका अद्भुत संबंध भारतीय राजनीति में नेतृत्व और सहयोग का एक आदर्श उदाहरण है।

धर्मनामा

धर्म, रक्षा व ऊर्जा का प्रतीक

कलावा

पंडित प्रभाकर मिश्र

सहयोगी धर्माचार्य

रूरल न्यूज नेटवर्क

हिन्दू धर्मावलंबियों में धार्मिक आयोजनों के दौरान हाथों में कलावा बांधने की परंपरा है। कलावा को मौली या रक्षासूत्र भी कहा जाता है। बहुधा यह लाल और पीले रंग के धागे से बना होता है। कभी-कभी इसे हरे रंग से भी बनाया जाता है। इसे पुरुषों के दाहिने हाथ में और महिलाओं के बायीं हाथ में बांधा जाता है।

जहां तक इसके शास्त्र सम्मत होने का प्रश्न है तो कलावा बांधने का उल्लेख विशेष रूप से विष्णु पुराण, गृह्य सूत्रों और स्कंद पुराण में मिलता है। इंद्रदेव को इंद्राणी ने और वामन भगवान ने दानवीर राजा बलि की कलाई में अमरता के लिए रक्षासूत्र बांधा था। इस रक्षासूत्र को त्रिदेव यानि ब्रह्मा, विष्णु और महेश का प्रतीक माना जाता है। लाल रंग शक्ति यानि दुर्गा, पीला रंग विष्णु और सफेद व हरा रंग शिव का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब कभी पूजा, हवन, व्रत या यज्ञ जैसे धार्मिक कर्मकांड का आयोजन किया जाता है तब पुरोहित या पंडित द्वारा यजमान समेत उपस्थित धर्मावलंबियों के हाथों में कलावा बांधा जाता है। कलावा बांधते समय मंत्रों का उच्चारण किया जाता है। इसका उद्देश्य साधक को दैवीय ऊर्जा और सुरक्षा प्रदान करना होता है।

कलावा बांधने की परंपरा केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक आध्यात्मिक रक्षा कवच के रूप में भी कार्य करता है। इसे बांधने से नकारात्मक शक्तियों, बुरी नजर और विघ्नों से बचाव होता है। यह व्यक्ति की भक्ति, श्रद्धा और संकल्प का प्रतीक भी माना जाता है। पूर्वांचल में विशेष रूप से लोग इसे सामाजिक और पारिवारिक आयोजनों जैसे कथा, मुंडन, जनेऊ, विवाह आदि में भी अनिवार्य रूप से अपनाते हैं।

इसका वैज्ञानिक महत्व भी है। ऐसा माना जाता है कि कलावा बांधने से कलाई की नसों पर हल्का दबाव पड़ता है जिससे रक्त प्रवाह नियंत्रित होता है और मानसिक एकाग्रता में सहायता मिलती है।

उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में कलावा बांधने की यह परंपरा न केवल धार्मिक, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों से भी जुड़ी हुई है। यह व्यक्ति को धर्म, रक्षा और ऊर्जा तीनों का समन्वित आशीर्वाद प्रदान करता है। सुश्रुत संहिता के अनुसार सिर के बीच के हिस्से और गुप्त स्थान का अगला भाग मणि कहलाता है। कलावा को मणिबंध भी कहा गया है। कलाई वाले हिस्से में कलावा बांधने से मानसिक रोगों से निजात मिलती है। इससे शरीर की क्रियाएं भी नियंत्रित होती हैं।

कलावा का रंग उतरने लगे या वो टूटने लगे तो उसे उतार देना चाहिए। मान्यता है कि कलावा हाथ में 21 दिन तक बंधे रहने देना चाहिए। इसके बाद उसे उतार देना चाहिए। कलावा को उतारते समय उसे प्रणाम करते हुए भगवान का धन्यवाद करना चाहिए और उसे साफ बहते जल में बहा देना चाहिए या किसी पवित्र पेड़ की जड़ में रख देना चाहिए।

mera vaahan ™

are you a
Responsible ?

Seamless Digital Experience with Great Features

- Private & Multi Mode Communication
- Internet Masked Calling
- Secure Data Protection
- Upload Vehicle & Personal Documents
- Important Alerts via Notifications
- Call Route or Forwarding Mode
- No Phone Number Shared
- View & Pay Challans Directly (Coming Soon)
- Pollution Under Control (PUC) Reminder
- Vehicle Insurance Reminder
- Nearest Washroom Locator (Coming Soon)
- Access Nearest Blood Bank (Coming Soon)

Scan with any Mobile Camera, Paytm or any QR Scanner App

Download the app now !!!

Get the free Mera Vaahan app on your phone

GET IT ON Google Play | Download on the App Store (Coming Soon)

Website : www.meravaahan.com
Call Now : +91-790 633 4427

VANMPLY®

— 100% Termite Proof Ply —

1st INDIA'S VPT Techonology Plywood &

LIFETIME WARRANTY

VANMPLY & VENEERS LLP

Factory: Survey No. 60/25-60/35, Near VKT Pharma, Chillapeta Rajam Village Road, Ranasthalam Mandal, Srikakulam, Andhra Pradesh-53240

For Trade Enquiries: 8894466944 | Visit: www.vanmply.com

Follow us on vanmply